Principles of Bank Rate (Part-13)

Condition Essential for the Success of Bank Rate Policy.

बैंक-दर नीति की सफलता के लिए निम्नांकित शर्तों का होना आवश्यक है :-

(i) बैंक दर में परिवर्तन का उधार की दरों पर प्रभाव :- केन्द्रीय बैंक की बैंक-दर का बाजार की मुद्रा एवं साख की दरों पर तत्काल प्रभाव पड़ना चाहिए, विशेषतः उस समय जबकि इसका उद्देश्य साख का संकुचन होता है।

(ii) अर्थ-व्यवस्था में पर्याप्त मात्रा में लोच का होना :- देश की आर्थिक व्यवस्था पर्याप्त मात्रा में लोचदार होनी चाहिए जिससे मुद्रा एवं साख की दरों में परिवर्तन से मूल्य, मजदूरी, लगान, उत्पादन एवं व्यवसाय सभी स्पष्ट रूप से प्रभावित हो सकें।

(iii) पूँजी के अन्तर्राष्ट्रीय प्रवाह पर किसी प्रकार का कृत्रिम नियंत्रण नहीं होना चाहिए।

(iv) विनियोगी वर्ग की मनोवृत्ति :→ बैंक-दर की सफलता विनियोगी-वर्ग की मनोवृत्ति पर भी निर्भर करती है। उधार की दर में वृद्धि होने पर यदि व्यापारी बहुत अधिक मात्रा में लाभ की आशा करते हैं तो बैंक-दर में वृद्धि से भी साख का संकुचन नहीं होगा। इसके विपरीत यदि मंदीकाल में व्यापारी अथवा विनियोगी वर्ग की मनोवृत्ति निराशावादी है तो बैंक-दर में बहुत अधिक कमी करने पर भी वे ऋण लेने के लिए तत्पर नहीं होते।

Scanned with CamScanner

इस प्रकार स्वर्ण प्रमाप के अंतर्गत बैंक-दर में परिवर्तन का देश की सम्पूर्ण आर्थिक व्यवस्था पर प्रभाव पड़ता है।

किन्तु बैंक-दर का आर्थिक व्यवस्था पर किस प्रकार से प्रभाव पड़ता है। इस सम्बन्ध में सामने दो महत्वपूर्ण विचारधाराएँ हैं :—

(i) पहली विचारधारा प्रो० हॉट्रे (Hawtrey) की है। जिसका प्रतिपादन उन्होंने 'Art of Central Banking' एवं 'A Century of Bank Rate' नामक अपनी पुस्तक में किया था।

(ii) दूसरी विचारधारा प्रो० कैन्स की है। जिसका प्रतिपादन उन्होंने अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक 'A Treatise on Money' में किया था।

हॉट्रे की विचारधारा :— हॉट्रे के अनुसार व्यापारी ही सम्पूर्ण आर्थिक व्यवस्था का केन्द्र-बिन्दु है। उसका कार्य उपभोक्ताओं की मांग का अंदाजा लगाकर उत्पादन एवं मांग में समायोजन स्थापित करना है। व्यापारियों की मांग के अनुसार ही उत्पादक अपने उत्पादन की मात्रा निर्धारित करते हैं।

कैन्स की विचारधारा :— कैन्स के अनुसार बैंक-दर विनियोग को प्रभावित कर आर्थिक व्यवस्था को प्रभावित करता है। उनके अनुसार विनियोग का अर्थ है अचल पूंजी का उत्पादन और अचल पूंजी में वृद्धि या कमी दो बातों पर निर्भर करती है :—

(i) पूंजी की सीमांत उत्पादकता है एवं

(ii) बाजार की दर

किन्तु केन्स की विवेचना भी निम्नांकित महत्वपूर्ण शर्तों पर आधारित है :— सर्वप्रथम तो बैंक-दर मुद्रा-बाजार की दीर्घकालिन दरों को उसी स्थिति में प्रभावित करती है जबकि इसके लिए समुचित वातावरण हो। उदाहरण के लिए, यदि जनता का अनुमान है कि बैंक-दर में परिवर्तन बहुत अधिक है तो ऐसी स्थिति में इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। अतः केन्स की विवेचना इस बात पर आधारित है कि बैंक दर की सफलता के लिए अनुकूल जनमत होना नितांत आवश्यक है।

Causes of Decline in the Significance of the Bank Rate.

बैंक दर के महत्व में कमी के निम्नांकित कारण विशेष रूप से उल्लेखनीय है :—

(i) मुद्रा बाजार की स्थिति में महान परिवर्तन;
(ii) आर्थिक व्यवस्था में परिवर्तन;
(iii) साख नियंत्रण के अन्य संप्रवाहिक साधनों के अधिकाधिक प्रयोग; तथा
(iv) खुली मुद्रा-नीति का समावेश।

क्रमशः